International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 03(I), July - September, 2024, pp. 36-40

मारवाड़ के राईका समाज का प्रमुख ऐतिहासिक स्थल : राईका बाग

डॉ. सुखराम*

प्रस्तावना

राजस्थान का पश्चिमी क्षेत्र मारवाड़ अपनी विविधता पूर्ण संस्कृति के लिए विश्व विख्यात है। इस मारवाड़ की पावन धरा ने विविध साधु संत, वीर–वीरांगनाएं दिए है जिसके साक्ष्य यहां के बीड़ड़ों, गांवों, ढाणियों में, तालाब की पाल पर लगे शिलालेख है। मारवाड़ का इतिहास बहुत ही समृद्ध रहा है। मारवाड़ की राजधानी पहले मण्डोर हुआ करती थी और यहां पड़िहार जाति के क्षत्रिय शासन करते थे। बाद में यहां राठौड़ शासकों ने मण्डोर पर शासन किया और जोधपुर को राजधानी बनाई।

मारवाड़ शब्द ही अपने आप में यहां के लोगों के कठोर जीवन को दृशाता है। मारवाड़ में विभिन्न जातिय समाज निवास करते है। इस ऐतिहासिक भूमि में प्रत्येक जाति का इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसा ही एक जातिय समाज है जिसे यहां राईका समाज के नाम से जाना जाता है। राईका समाज का पारम्परिक व्यवसाय ऊंट पालन है। राईका जाति एक कर्तव्य परायण और ईमानदार कौम है। यह जाति ऊंट की तीव्र सवारी करना और मार्गो के विशेषज्ञ होते है। इसीलिए इस जाति के लोगों को सूतर खाने में सूतरसवार के रूप में रखा जाता था। साथ इनकी ईमानदारी और बोलने में निपुणता के कारण मुख्यतः मारवाड़ में सन्देशवाहक के रूप में इन राईका जाति के लोगों को ही रखा जाता था। पड़िहार शासकों के काल में आसुराम राईका को सूतर खाने का अधिकारी बनाया गया था। महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के समय राघा राईका की ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता का वर्णन जोधपुर महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र की पुरालेखीय सम्पदा में किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में राईका और राईका बाग पर विस्तृत प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। पड़िहार काल में राईका जाति के नाम पर राईका बाग लगाना। जोधपुर के राठौड शासकों के समय राईका बाग के स्थान पर हाड़ी रानी द्वारा पुनः फुलों का बाग लगाना तथा यहां महलो का निर्माण करवाना। पुनः उसे राईका जाति के सम्मान में राईका बाग और राईका बाग पैलेस नाम देना। ब्रिटिश काल में राईका बाग पैलेस रेलवे स्टेशन नाम से रेलवे स्टेशन की स्थापना आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

जिस काल में मारवाड़ पर पड़िहार शासकों को शासन था। 7वीं शदी के उतरार्द्ध में मण्डोर पर पड़िहार नरेश सूरसिंह पड़िहार का शासन था। इनके शासन काल में राईका जाति के आसुराम राईका का उच्च स्थान था। एक मात्र राईका समाज का राजपरिवार से विश्वसनीय और ईमानदारी से पूर्ण संबंध थे। राईका समाज एकमात्र ऐसा समाज था जिनका राजपरिवार और आमजन दोनो से सीधा संबंध था। राव भाटों के अनुसार वि. सं. 709 में आसुराम राईका का जन्म जैसलमेर के भरमसर में हुआ था। जब वे 11 साल के थे तब वहां अकाल

* श्री वीर हड़मलजी राईका इतिहास एवं संरक्षण समिति, राजस्थान।

पड़ा। अकाल से प्रभावित होकर आसूराम और उसकी मां उपा सापधरी (राईका गौत्र) के साथ मारवाड़ आ गए। इस समय मारवाड़ में राजकिय ऊंटों को एक त्वचा रोग हो चुका था। इस बिमारी के भय से पड़िहार शासक ने अपने सूतरखाने से बिमार ऊंटों को सूतरखाने से निकाल दिया। नियति को भी यही मंजूर था। आसुराम अपनी मां के साथ एक तालाब के किनारे इन ऊंटों को व्याधिग्रस्त देखकर इनका इलाज किया। चुंकि राईका जाति का संबंध प्रारम्भ से ऊंटों के साथ रहा था। कुछ ही दिनों में वे ऊंट तैयार हो गए। ऊंटों के सही हो जाने की सूचना जब पड़िहार नरेश सूरसिंह ने उस राईका लड़के को दरबार में बुलाकर प्रश्न किए गए। आसुराम के उतर सुनकर सूरसिंह ने उसे सूतर खाने का प्रमुख अधिकारी बनाया। कालान्तर में आसुराम राईका पड़िहार शासक का सबसे विश्वासपात्र बन गया। इनकी ईमानदारी और राजपरिवार के प्रति स्वामीभक्ति से प्रसन्न होकर आसुराम को एक क्षत्रिय कन्या से विवाह करने का प्रस्ताव भी रखा किन्तु मां और पुत्र ने स्वयं के जातिय समाज में विवाह करने की ईच्छा प्रकृट की। वि. सं. 735 में जैसलमेर तलाक कर आए राईका चौखा गांव में अपने जाति वाले राईको के यहां निवास करने लगे थे।

चौखा में पहले से ही राईका जाति के लोग निवास करते थे जिसका प्रमाण यहां लगा वि. सं. 171 उद्भम की पत्नी महासती का लेख है। पड़िहार नरेश ने उन राईकों से आसुराम के विवाह की बात की। जैसलमेर लुद्रवा तलाक आए राईकों ने आसुराम व उसकी मां से वार्तालाप किया और स्वयं जातिय समाज से होने के कारण विवाह के लिए तैयार हो गए। दंत कथाओं के अनुसार पड़िहार नरेश ने आसुराम को हाथी पर तौरण बांधने चौखा राईकों के घर भेजा। आसुराम राईका का विवाह राईकों की गांगल गौत्रीय गुगल गांगल राईका की पुत्री नेणादेवी से हुआ। पड़िहार नरेश ने आसुराम राईका को परिवार बसाने के लिए वर्तमान राईका बाग का विशाल भू–भाग पट्टे में दे दिया। इसके साथ ही राईका जाति के 38 गौत्रों को पटटे में गांव दिए। चुंकि गांगल गौत्र चौखा में बसी हुयी थी तो चौखा गांव गांगल गौत्र को पटटे में दे दिया। पीशवाला राईका आसुराम ने राईका बाग की जमीन पर अपनी ढाणी बसाई।

कालान्तर में एक दिन सूरसिंह और उनकी रानी शिकार के लिए आसुराम राईका की ढाणी के निकट आए तो रानी को आसुराम की ढाणी वाली जगह बहुत ही सुन्दर लगी। रानी के मन में यहां बाग लगाने की ईच्छा हुयी। चुंकि नरेश ने स्वयं यह जगह आसुराम को दी थी तो वापस नहीं मांग सकता था। पड़िहार नरेश ने रानी को बोलो कि आप आसुराम को अपना मुंहबोला भाई मानती है तो उसे धर्मभाई बना लिजिए। उसके बाद आसुराम से यह जगह उपहार में मांग लिजिएगा। रानी ने आसुराम को बुलाया और उसे अपना धर्म भाई बनाकर यह जगह उपहार मे मांगी। आसुराम ने परम–त्याग का परिचय देते हुए रानी बहन को यह जगह उपहार में देकर अन्यत्र बसने का वचन दे दिया। किन्तु एक वचन रानी और नरेश से भी लिया कि इस जगह को राईका जाति के नाम से जाना जाए। रानी ने यहां विशाल फुलों का बाग लगाकर उस बाग का नाम राईका जाति के सम्मान में राईका बाग रखा।[1]

वर्तमान में स्थानीय लोगों को भी इस घटना का पता है। यहां रहने वाले स्थानीय लोगों को पता है कि यहां पहले राईका अपने ऊंटों के साथ रहते थे। इसी राईका बाग पैलेस के समीप आसुराम राईका की ऊंट पर सवार प्रतिमा लगी हुई है। जो यहां राईका जाति के इतिहास का द्योतक है। वर्तमान में इस क्षेत्र में निवास बन जाने से राईका बाग की सुन्दरता कम नही हुई है। आज जोधपुर का मुख्य क्षेत्र राईका बाग ही है। राईका बाग जोधपुर का केन्द्र बिन्दु कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

नैणसी के अनुसार मण्डोर पर पंवारों के बाद पड़िहारों का शासन स्थापित हुआ था। नाहड़राव नागार्जुन का पुत्र था जिसने मण्डोर में कई निर्माण करवाया।[2] कहा जाता है कि नाहड़राव पड़िहार पीसवाला गौत्रीय राईका जाति में शामिल हो गया। उसकी पांच संतानों के नाम की राईकों में गौत्र मिलती है।[3] मारवाड़ के राईका रावों के अनुसार नाहड़राव का विवाह महादेव ने पिण्डा की पुत्री वीरा से करवाया। वीरा व नाहड़राव के चार पुत्रों का जन्म हुआ जिनसे राईकों की चार गौत्र निकली।[4]

राईका बाग की ढाणी से 3 कोस पर आसुराम राईका ने एक बेरे का निर्माण करवाया था[5] जिसे आज भी स्थानीय लोग राईका बेरा के नाम से जानते है। स्थानीय माली जाति के 60 वर्षीय जयसिंह भाटी ने बताया कि जब पूर्व मध्यकाल में हमारे पूर्वज सिंध से यहां आए थे तब यहां राईका बेरा के आस पास राईका जाति के लोग अपने ऊंटों के साथ रहते थे। किन्तु बाद में पशुधन की सुविधा के लिए वे यहां से पलायन कर अन्यत्र चले गए। फिर यहां हमारे पूर्वज आकर बस गए और इस बेरे का उपयोग करने लगे।[6]

राईका बेरा, मगरा पूंजला जोधपुर

समय के बदलने के साथ ही राजनीतिक परिवर्तन भी हुआ। मारवाड़ पर पड़िहारों के बाद राठौड़ शासन स्थापित हुआ। सभी राठौड़ शासकों ने राईका जाति को महत्वपुर्ण सम्मान दिया। महाराजा जसवंतसिंह प्रथम ने कई गांव राईकों का पटटे में दिए।[7] महाराजा जसवंतसिंह प्रथम का सबसे विश्वासपात्र एक राईका राघा था। जिसने महाराजा जसवंतसिंह के अन्तिम समय में साथ था और मृत्यु के बाद उनके पुत्र अजितसिंह की सुरक्षा करने में भी एक ढाल के समान कार्य किया।[8] दुर्भाग्य ऐसे वीरो का विशेष उल्लेख नहीं किया जाता है। सम्भवतः महाराजा जसवंतसिंह के शासन काल में आसुराम राईका की ढाणी वाली जगह (राईका बाग) पर राईका पुनः ऊंटों के साथ बस गए होगें। हाड़ी रानी ने इस जगह को देखा और यहां पुनः बाग लगवाने का विचार किया। रानी ने उन राईकों से पुछा होगा कि इस जगह पहले क्या था तो उन राईकों ने बताया कि यहां पड़िहार शासक व रानी का बनाया बाग था। जिसे राईका बाग कहते थे। मारवाड़ की ख्यात के अनुसार रानी ने भी यहां बाग लगाने का विचार किया और बाग लगवाया। हाड़ी रानी ने यहां महलों का भी निर्माण करवाया। जिन्हें राईका बाग पैलेस के नाम से जाना जाता है।[9]

राईका बाग पैलेस

कालान्तर में 1882 में जोधपुर शासक ने राज परिवार के लिए इसी राईका बाग की जगह पर ही एक रेलवे स्टेशन का निर्माण किया गया जिसका नाम राईका बाग पैलेस जंक्शन रखा गया। जोधपुर दुर्ग संग्रहालय में इस इतिहास को देखा जा सकता है। जहां राईका बाग पैलेस रेलवे स्टेशन का मॉडल संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया।[10]

जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग के संग्रहालय में रखा राईका बाग स्टेशन मॉडल

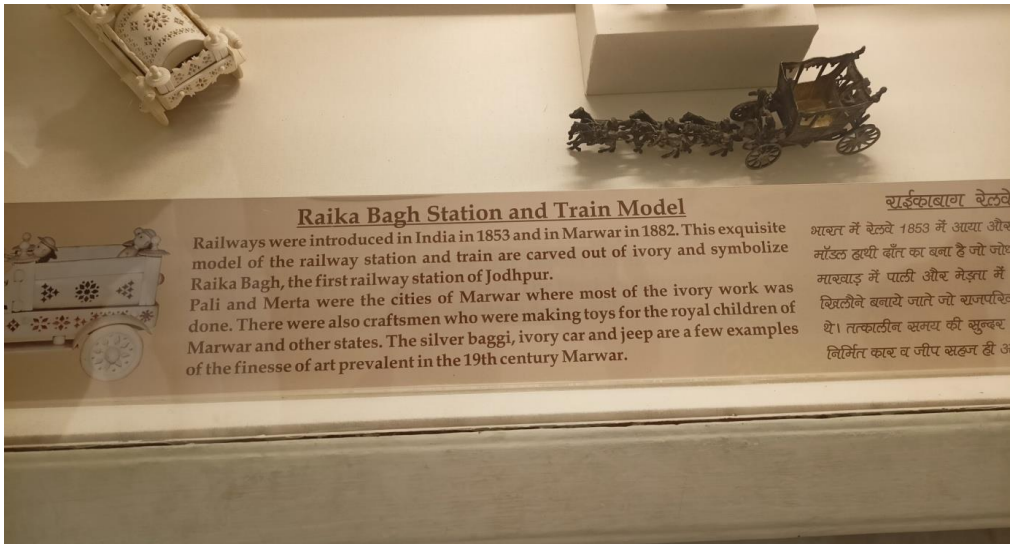

कालान्तर में आई रेलवे की एडमिनिस्ट्रशन रिर्पोटो में भी इस स्टेशन का नाम ''राईका बाग (raika bagh) अंकित है। वर्ष 1915 में आई वर्ष 1912–13 की एडमिनिस्टेशन रिपोर्ट के अनुसार जोधपुर–फलोदी लाईन के लिए राईका बाग पैलेस स्टेशन को खोल दिया गया।[11] इसी तरह 1930 में आई वर्ष 1926–27 की रिपोर्ट में राईका बाग व देसुरी पैलेस में रेलवे ने बहुत–सा निर्माण कार्य करवाया।[12]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 उज्जवल, नगराज : मारवाड़ के मारू राईका राव बही, मु. पो. लाम्बिया, जैतारण

2 सिंह, फतेह : मारवाड़ परगना री विगत, भाग–1, पृ. सं. 2, राजस्थान राज्य प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर 1998

3 लोहिया, बजरंग लाल : राजस्थान की जातियां, पृ. सं. 195, बजरंग लाल लोहियां प्रकाशन कलकता 1954

4 उज्जवल, नगराज : मारवाड़ के मारू राईका राव बही, मु. पो. लाम्बिया, जैतारण

5 व्यक्तिगत साक्षात्कार : बादरराम राईका उम्र 95, गांव भोपालगढ़ 12 फरवरी 2019

6 यक्तिगत साक्षात्कार : जयसिंह भाटी, उम्र 60, राईका बेरा, जोधपुर, 22–05–2022

7 चन्द्र, प्रो. सतीश, रघुवीरसिंह व घनश्यामदत शर्मा : जोधपुर हकिकत री बही, पृ. सं 233, मिनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1976

8 भाटी, हुकुम सिंह : राठौड़ों की ख्यात, भाग 2, पृ. सं. 290, 309, इतिहास अनुसंधान संस्थान, चौपासनी, 2007

9 भाटी, डॉ. हुकुम सिंह : मारवाड़ के ओहदेदारों का इतिहास में योगदान, पृ. सं. 168–69, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर 2.013

10 राईका बाग पैलेस जंक्शन का प्रतिरूप : मेहरानगढ़ संग्रहालय, जोधपुर

11 एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट ऑफ मारवाड़ स्टेट वर्ष 1912–13, : पृ सं. 30, वॉल्युम 29, प्रकाशन वर्ष 1915,

12 एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट ऑफ मारवाड़ स्टेट वर्ष 1926–27, : पृ सं. 30, वॉल्युम 29, प्रकाशन वर्ष 1930,

❖◆❖